Page No.: _____
Date ___/___/_____

राजा – सूत, दूरमनुसारङ्गेण वयमाकृष्टाः। अयं पुनरिदानीमपि
ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः।
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति ॥७॥
तदेष कथमनुपतत स्व मे प्रयत्नप्रेक्षणीयः संवृत्तः।

अन्वयः → ग्रीवाभङ्गेति – पश्य (अयं पुनः इदानीम् अपि) अनुपतति स्यन्दने ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुः बद्धबुद्धि (सन्) शरपतनभयात् पश्चार्धेन भूयसा पूर्वकायं प्रविष्टः (सन्) श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः अर्धावलीढैः दर्भैः कीर्णवर्त्मा (सन्), उदग्रप्लुतत्वात् वियति बहुतरम् उर्व्यां स्तोकं प्रयाति ॥७॥

शब्दार्थः – अमुना = इस, सारङ्गेण = मृग से, आकृष्टाः = खींचकर ले जाये गये हैं, अनुपतति = पीछे दौड़ते हुए, स्यन्दने = रथ पर, ग्रीवाभङ्गाभिरामम् = गर्दन के मोड़ने के कारण सुन्दर प्रतीत होने वाला, मुहुः = बार-बार, बद्धदृष्टिः = डाली है दृष्टि जिसने ऐसा, पश्चार्धेन = अपने शरीर के पिछले आधे भाग से, पूर्वकायम् = शरीर के पूर्व भाग में, श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः = भागने के परिश्रम से खुले हुए मुख से नीचे गिरने वाले, अर्धावलीढैः = आधे चबाये हुए, दर्भैः = दर्भों से, कीर्णवर्त्मा = व्याप्त मार्ग वाला, उदग्रप्लुतत्वात् = ऊँचा और लम्बा कूदने के कारण, वियति = आकाश में, स्तोकम् = थोड़ा, उर्व्याम् = पृथिवी पर।

(हिन्दी रूपान्तर)

राजा – हे सूत, यह मृग हम लोगों को बहुत दूर खींच लाया है, फिर भी तो देखो, यह हमारे रथ की ओर गर्दन घुमा-घुमाकर मनोहरता पूर्वक देखता हुआ बाण लगने की आशंका से अपने पीछे के भाग = पीठ को शरीर के पूर्वभाग = गर्दन की ओर समेट कर आधे चबाये हुए कुश के ग्रासों को परिश्रम के कारण खुले हुए अपने मुख के मार्ग में गिरता हुआ आकाश में छलांग मारता हुआ दौड़ ही रहा है। जमीन पर तो इसके पैर कभी-कभी पड़ते हैं।

Scanned with CamScanner